नेहरूकाल से आई है कांग्रेस की चापलूस परंपरा

पिछले हफ्ते अखबारों के एक शीर्षक से मैं चकित हो गया। शीर्षक था ''१० जनपथ चापलूसों को फटकने नहीं देता''। वैसे इतना मैं शुरू में ही कह देना चाहता हूं जहां शहद होता है, वहां मधूमक्खियों का डेरा होता है। कहीं कम, कहीं ज्यादा। चापलूस और जी-हुजूरी, सगे भाई-बन्धु होते हैं और उनसे बचना बहुत ही कठिन तपस्या है। विरले ही बच पाते हैं। भारत में तो चारण भाट एक प्रजाति ही होती थी जो राजा-महाराजाओं की विरुदावली बोलती-लिखती रहती थी। उनके शौर्य का वर्णन करती रहती थी। उनका काम ही उन्हें आकाश में चढ़ाना होता था। १० जनपथ सत्ता का केन्द्र है और चापलूसी, जी-हुजूरी कांग्रेस की लम्बी परम्परा रही है। उनके शासकों में कोई अपवाद नही है।

अभी एक दिन केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंह ने कहा कि राहुल गाँधी को देश का प्रधानमंत्री होना चाहिए। चापलूसी की इस शुरूआत के बाद पूरे आधे दर्जन कांग्रेस के नेताओं ने राहुल गाँधी के प्रधानमंत्री बनने की वकालत किसी न किसी बहाने से कर दी। और मज़ा ये कि पार्टी के प्रवक्ता ने इसका खण्डन भी कर दिया। जनता की निगाह में खण्डन और मण्डन दोनों हो गया। वैसे सब जानते थे जैसे राजकुमारों को राज्यारोहण के लिए धीरे धीरे शिक्षण से तैयार किया जाता था वैसे ही जिस दिन राहुल गांधी को पार्टी का महासचिव बनाया गया, उस दिन से ही यह प्रक्रिया चालू हो गई। जगजाहिर सी बात थी, लेकिन जिस मौके पर यह बात कही गई वह दिन महत्वपूर्ण था।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने मंत्रिमण्डल का विस्तार किया था। कुछ नौजवान मंत्रियों को मंत्रिपरिषद में लिया था। राहुल गांधी के लिए कहा गया कि मंत्री बनाने का प्रस्ताव उन्हें भी दिया गया था। लेकिन उन्होंने मंत्रिपद स्वीकार नहीं किया। एक तो मंत्रिपद के त्याग की महिमा और ऊपर से चारों तरफ उन्हें प्रधानमंत्री बनाने का कोरस। जबकि कायदे से देखा जाए तो कांग्रेस में उनके काबिलियत से बेहतर कम से कम ५० नेता महासचिव के पद के योग्य हैं। मगर उनको न महासचिव बनाया जाना था न वह बनाए गए महासचिव। कहां राजकुमार और कहां गंगुआ तेली। लेकिन चर्चा से ही साफ हो गया था कि उनके प्रधानमंत्री पद पर आरोहण की तैयारी चल रही है। योग्यता यह है कि संसद में वे एक बार बोले हैं और वह भी लिखित भाषण पढ़कर। लिखित भाषण भी उनका नहीं होगा। किसी दूसरे ने ही लिखा होगा। मगर प्रोपेगंडा से महिमामंडित करने के लिए ऐसे हथकंडे राज-खानदानों में अपनाने का रिवाज है।

कांग्रेस में चापलूसी और ठकुरसुहाती की परम्परा नेहरूकाल से है। १९५० के दशक में कार्यसमिति की बैठक में नेहरू ने कहा था कि मुझे तो महंत बना दिया गया है और लोग चाहते हैं कि मेरी महंती से उनका चुनावी बेड़ा पार लग जाए। नेहरू को वो लोग हमेशा नापसंद थे जो जी-हुजूरी नहीं करते हों। पुरुषोत्तम दास टंडन को नेहरूनापसंद करते थे। उनको पद से हटा दिया गया। नेहरूखुद अध्यक्ष बन गए। उस दौर के अनेक राजनेताओं ने अपनी आत्मकथाएं लिखी हैं। वीएन गाडगिल, केएम मुंशी जैसे अनेक आत्मकथा लेखक नेताओं ने खुले शब्दों में लिखा है कि नेहरू चापलूसों को पसंद करते थे। डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे अनेक नेताओं ने पत्र लिखकर उनके चापलूसी प्रेम का उल्लेख किया है। जिन नेताओं को जी हुजूरी न होने के कारण पदमक्त किया गया ये उनके वे साथी थे जो कद्दावर थे। नेहरूके साथ साथ जेलें काटी थी। नेहरू की तरह ही बहुपठित थे। कहने का अर्थ यह कि स्वयं नेहरूकाल से ही कांग्रेस में चापलूसी का जबरदस्त प्रचलन हो गया था। नेहरू ने यूएन धेबर को अध्यक्ष बना दिया। यूएन धेबर ने अनेक अवसरों पर कांग्रेस के नेताओं को सलाह दी कि वे वह चीजें न बोले और न लिखें, जो नेहरूको पसंद न हो। लेकिन चापलूसी के मामले में इंदिरा काल के कांग्रेस अध्यक्ष देवकांत बरुआ ने बाजी मार ली। बरुआ ने कहा ''इंदिरा इज़ इंडिया एण्ड इंडिया इज़ इंदिरा''। यानि भारत इंदिरा है और इंदिरा ही भारत है। इस बेशर्म चापलूसी का कोई दूसरा नमूना मिलना कठिन है।

नेहरू-गांधी खानदान के शासनकर्ता अपने-अपने चापलूस मंडली के लिए विख्यात रहे। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने। वह नौसिखिए थे। चापलूसों ने उन्हें घेर लिया। उनसे कई गलत काम करवाए। भ्रष्टाचार के आरोप लगे। उसके बाद कांग्रेस अध्यक्ष पद पर जबरदस्ती कब्जा किया। तत्कालीन अध्यक्ष सीताराम केसरी को शौचालय में बंद कर जबरदस्ती अध्यक्ष पद पर सोनिया गांधी बैठ गई। यह उनकी इतालवी माफिया शैली की पहली करामात थी। उनकी भी एक चापलूस मंडली है। जब राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने उनको प्रधानमंत्री बनाने से इनकार कर दिया तब कांग्रेस के नेताओं की एक सभा हुई। वह उनका ऐतिहासिक दिन था। जो नेता उठता था, सोनिया गांधी की त्याग-तपस्या का जोरदार वर्णन करता था। ऐसे ही भाषण होते गए जो सचमुच चापलूसी-होड़-सम्मेलन जैसा था। उनको प्रधानमंत्री बनाने से इनकार कर दिया गया था लेकिन तस्वीर यह बनाई गई कि जैसे उन्होंने इस पद का त्याग किया है, और डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाया है।

कांग्रेस की चापलूसी चरित्र का एक लक्षण था, जाते ही पैर छूना। बड़े बड़े नेताओं से मिलते समय अक्सर लोग पैर छूते भी थे। कांग्रेस के एक कार्यकारी अध्यक्ष थे। नाम था- पंडित कमलापति त्रिपाठी। वह अपेक्षा करते थे कि उनसे मिलने वाला हर आदमी उनके पैर छुए। और गलती से किसी ने ना छुआ हो तो वे अपना पैर आगे बढ़ा देते थे। और फिर भी कोई चूक जाए तो पैर हिलाते थे। पैर ना छूने वालों के नम्बर भी काट लेते थे। कांग्रेस के ही एक समकालीन नेता थे-

वीएन गाडगिल, केएम मुंशी जैसे अनेक आत्मकथा लेखक नेताओं ने खुले शब्दों में लिखा है कि नेहरू चापलूसों को पसंद करते थे। डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे अनेक नेताओं ने पत्र लिखकर उनके चापलूसी प्रेम का उल्लेख किया है।

जगजीवन राम। बहुत बड़े नेता थे। उन्हें भी पैर छुवाने का चस्का था। खासकर कोई ब्राह्मण अगर उनके पैर छुए तो वे बड़े प्रसन्न होते थे। उस पर कृपालु भी हो जाते थे। चापलूसी भी भांति भांति की होती है। मैंने बड़े बड़े मंत्रियों को एक दूसरे किस्म की चापलूसी करते देखा है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री टी अंजइया संजय गांधी की चप्पल उठाकर ले जाते देखे गए। चप्पल, जूता, छाता उठाना भी चापलूसी का एक प्रकार है। एक केन्द्रीय मंत्री थे। नाम था भीष्म नारायण सिंह। इंदिरा गांधी जब संसद में आती थी, तो वे गेट पर छाता लेकर खड़े रहते थे। चाहे धूप हो या ना हो। और चाहे उनको इंतजार में घंटों तपस्या करनी पड़े। फोटोग्राफरों के पास ऐसी सैकड़ों तस्वीरें हैं। अगर उनकी तस्वीरों की प्रदर्शनी लगा दी जाएं तो बड़ी दिलचस्प प्रदर्शनी-चापलूसी का अध्ययन हो जाएगा।

चापलूसी का यह सिलसिला अब राहुल गांधी के इर्द-गिर्द चल रहा है। उन्हें प्रधानमंत्री पद पर बैठाने के सपने देखे जा रहे हैं। इसमें अव्वल रहे मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह और विदेशमंत्री प्रणव कुमार मुखर्जी। प्रणव कुमार मुखर्जी ने लम्बा-चौड़ा भाषण दे दिया और इसका समर्थन कर दिया। अगर नेहरू खानदान को निकाल कर देखें तो अर्जुन सिंह और प्रणव कुमार मुखर्जी वरिष्ठतम मंत्री हैं। और मुखर्जी तो बहुत अनुभवी भी हैं। दोनों प्रधानमंत्री होने के वाज़िब हकदार हैं। ऐसे लोग जब राहुल गांधी को प्रधानमंत्री पद पर देखना चाहते हैं तो बताइए कि चापलूसी रेखा कितने नीचे चली गई है। कांग्रेस आज एक पार्टी नहीं बची है। वह नेहरू-गांधी परिवार की व्यक्तिगत कम्पनी है। जिसमें तमाम नियुक्तियों का फैसला कम्पनी की मालकिन करती हैं। देश का दुर्भाग्य यही है कि सत्ता एक ही नेहरू-गांधी खानदान में रहेगी।

यदि ऐसा ही है तो संजय गांधी के बेटे वरुण गांधी भी तो उसी खानदान के हैं। लेकिन सत्ता के इर्द-गिर्द न वह आया और न ही उनकी माँ मेनका गांधी। मानो वह नेहरू-गांधी खानदान की हों ही नहीं। राजीव गांधी की इतालवी बहू ने उन्हें परिवार निकाला दे दिया है। जब मैं राहुल गांधी और वरुण गांधी में तुलना करता हूं तो मुझे उनकी योग्यताओं में भारी अंतर नजर आता है। एक राहुल गांधी है जिन्होंने कभी किसी विषय पर विस्तार से बिना लिखे भाषण नहीं दिया है। एक बार एक इंटरव्यू एक पत्रिका को दिया। उसमें राजनैतिक अपरिपक्वता भरी हुई थी। पार्टी ने पहले उनके इंटरव्यू से इनकार किया फिर उसका खण्डन किया।

लगभग उतने ही उम्र के वरुण गांधी है। वरुण गांधी अपेक्षया परिपक्व हैं। किसी भी विषय पर अपने विचार रख सकते हैं। डील-डौल और कद-काठी और खूबसूरती में राहुल गांधी से कम नहीं हैं। लेकिन उन्हें तो परिवार से निकाल दिया गया है। अलबत्ता एक फर्क है। राजीव गांधी को इतालवी बहू पसंद आई और लगता है राहुल गांधी को कोलम्बियाई लड़की पसंद आएगी। वरुण गांधी के साथ ऐसा नहीं है।

अब आप ही बताइए कि ''१० जनपथ में चापलूसों को फटकने नहीं दिया जाता'' इस शीर्षक से मैं चौंका तो यह वाजिब था या गलत?

चापलूसी प्राय: बहुतांश लोगों को पसंद आती है। उसमें कुछ लोग वह भी आते हैं जो चापलूसों को ही सत्य मान लेते हैं। चापलूसी कला ही ऐसी है। अर्जुन सिंह जैसे दिग्गज चापलूस के सामने कौन ठहर सकता है। लेकिन जो ये समझते हैं कि अगला चापलूसी कर रहा है, यह प्रशंसा झूठी है, वह अपना काम निकालने के लिए कर रहा है और वह मुझे पीछे से गाली भी दे सकता है, तो वे उसका पूरा मंतव्य समझ कर उसके अनुसार व्यवहार करते हैं। वरना चापलूसी और चापलूसों से बचना मुश्किल है।

कांग्रेस ने जो चापलूसी की संस्कृति चलाई, वह संस्कृति आज कमोवेश मात्रा में राष्ट्रीय चापलूसी चरित्र बन गया है। कहीं कम कहीं ज्यादा, मगर है यह हर जगह। आम समाज से लेकर केन्द्रीय सरकार तक।